Purva Mimaansa | Refereed | Peer Reviewed
ISSN: 0976-0237 | Volume 12, Issue September 2021 | Impact Factor 4.765

निराला के काव्य में राष्ट्रीय भावना का मूल्याकंन

सुनील पाटिल
सहायक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, द्वारका दास गोवर्धन दास वैष्णव कलाशाला अरुम्बाक्कम् – चेन्नै

शोधसार

1916 में जब निरालाजी के काव्य का आरंभ हुआ तब भारत राष्ट्रीय जागृति और उथल – पुथल का समय था। साम्राज्य-वादी अंग्रेज विजित भारतीय जनता को दबाने के लिये उनकी सभी प्रकार की शक्तियों को कुचल रहे थे। उनकी सांस्कृतिक परम्परा को तुच्छ सिद्ध करने का प्रयत्न किया। किन्तु बाद में भारतीय जनता में राष्ट्रीय भावना तथा जातीय चेतना का जागरण हुआ। बंग भूमि में निराला जी के काव्य का उदय हुआ जहां राष्ट्रीय जागरण का एक नवीन युग-चेतना के जागरण का श्रेयस्कर कार्य तीव्र रूप से हो रहा था। निरालाजी की राष्ट्रीयता एक ओर स्वस्थ एवं संपन्न भारत समाज की कामना करती हैं तो दूसरी ओर अन्तर्राष्ट्रीय एकीकरण भावना का समर्थन करती हैं। निरालाजी ने भारतवर्ष की वर्तमान विभीषिका और दुर्दशा देखी। देश में व्याप्त रहने वाली राजनीतिक पराधीनता, आर्थिक दुरवस्था, स्वार्थपरता, नष्टप्रायः वर्णव्यवस्था इत्यादि को देखकर निरालाजी व्यथित हुए। तब उनकी आत्मा की वेदना मुखरित हो उठी। उन्होनें वर्तमान दुरवस्था को मिटा देने का संकल्प किया। निरालाजी को इस बात का अपार विश्वास हैं कि स्वतंत्रता की भावना से उद्दीप्त होकर दुःख –दारुण परतंत्रता पर यदि भारतवासी टूट पडे तो उनकी शक्ति के समक्ष सुमेरू भी ठहर नहीं सकता।

मातृ-भूमि के प्रति निरालाजी की भक्ति जैसी अगाध रही वैसी ही अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति भी उनकी अपार निष्ठा रही। नव-जागरण के उपादानों में देशप्रेम का सर्वप्रथम स्थान हैं। निरालाजी की यह राष्ट्रीयता, राष्ट्र की संकुचित सीमा से ऊपर उठकर एक नूतन विश्व संस्कृति का उदात्त स्वरूप ग्रहण करती हैं। जहां विश्व-जीवन की विविधता एकता में खो जाती है। जिसे निरालाजी ने अपनी कविता उद्बोधन में बडें ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया हैं।

भूमिका

1916 में जब निरालाजी के काव्य का आरंभ हुआ तब भारत राष्ट्रीय जागृति और उथल – पुथल का समय था। राष्ट्रीय चेतना जनमानस में जागरूक हो रही थी। विदेशी आक्रांताओं के विरुद्ध भारतीय जनता के मन में रोष बढ रहा था। साम्राज्य-वादी अंग्रेज विजित भारतीय जनता को दबाने के लिये उनकी सभी प्रकार की शक्तियों को कुचल रहे थे। भारतीयों के आत्मगौरव को कुचलने के प्रयत्न में अंग्रेजों ने कोई कसर नहीं रखी। उनकी सांस्कृतिक परम्परा को तुच्छ सिद्ध करने का प्रयत्न किया। उस समय भारतीयों की सुप्त चेतना को उद्‌बुद्ध करने का काफी प्रयत्न हुआ। धीरे-धीरे उनमें अपनी सांस्कृतिक परम्परा का बोध जाग उठा। उन्हें अपने भूले हुए स्वर्णिम अतीत का

नव-परिचय प्राप्त हुआ।

क्रमशः अतीत के पुनरुत्थान के कारण भारतीय जनता में राष्ट्रीय भावना तथा चेतना का जागरण की उदात्त स्थिति के संबन्ध में डा० नागेन्द्र कहते हैं "स्वभावतः एक ओर भारत के दिव्य मातृ-रूप में कल्पना की गयी दूसरी ओर उसके हिमालय, गंगा, प्रयाग, दिल्ली, चित्तौड हल्दीघाटी से संबद्ध परम्परागत मानव संस्कारों को उद्‌बुद्ध किया गया। भारत की मातृ-भूमि के शत-शत भव्य-चित्र हमारी राष्ट्रीय सांस्कृतिक कविता की अमूल्य निधि हैं। त्रिंशकोटी भारतवासी अपनी वर्तमान हीनता को भूलकर इस विराट रूप के सम्मुख आत्मविभोर हो उठे"।[1]

बंग भूमि में निराला जी के काव्य का उदय हुआ जहां राष्ट्रीय जागरण का एक नवीन युग-चेतना के जागरण का श्रेयस्कर कार्य तीव्र रूप से हो रहा था। रामकृष्ण के निकटतम संपर्क से निराला जी को रामकृष्ण परमहंस की अद्वैतवादी विचारधारा और स्वामी विवेकानंद की आध्यात्मिकता की उपलब्धि हुई। स्वतंत्रता के लिए तडपती हुई मातृ-भूमि की आत्मा का करुण-क्रंदन निरालाजी की आत्मा तक पहुंच गया। राष्ट्र की चेतना निरालाजी के वाणी से मुखरित हो उठी।

राष्ट्रचेतना का स्पंदन निरालाजी के काव्य में निरालाजी के विचारधाराओं को अंकुरित एवं पल्लवित करनेवाली स्वामी विवेकानंद की आध्यात्मिकता थी। जिसने नव-हिन्दू जागरण को संजीवनी प्रदान की थी। विवेकानंद की हिन्दू जागरण की विचारधारा में सांस्कृतिक दृष्टि से विश्व की एकात्मकता पर बल दिया गया था। निरालाजी की राष्ट्रीयता एक ओर स्वस्थ एवं संपन्न भारत समाज की कामना करती हैं तो दूसरी ओर अन्तर्राष्ट्रीय एकीकरण भावना का समर्थन करती हैं। निरालाजी भारत मां की भव्य दिव्य मूर्ति का चित्र इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं।

"भारति जय विजय करे कनक शस्य कमल धरे!
लंका पदतल शतदल, गर्जितोर्मि सागर, जल
धोता शुचि चरण युगल स्तव कर बहु अर्थ भरे,
तरू तृण वन लता वसन अंचल में खचित सुमन,
गंगा ज्योतिर्जल कण धवल धार-हार गले।
मुकुट शुभ्र हिम तुषार प्राण प्रवण ओंकार।
ध्वनित दिशाएं उदार, शतमुख शतरव मुखरे"।।[2]

भारत माता के इस उदात्त मूर्ति-विधान को पढकर या सुनकर गौरव मण्डित भारत-माता सुमधुर रूप प्रत्येक भारतीय के मन में अंकित हो जाता हैं। निरालाजी का यह गीत भारतीयों के मन में भावात्मक प्रतिक्रिया लाने में सशक्त हैं। निरालाजी समन्त राष्ट्र को उदात्त सांस्कृतिक परिवेश में देखते हैं। इस संबन्ध में डा.नागेन्द्र ने कहा हैं – "इस चित्र में मन्दिर का

वातारण और मुखर हो गया हैं" । [3]

निरालाजी ने भारतवर्ष की वर्तमान विभीषिका और दुर्दशा देखी । देश में व्याप्त रहने वाली राजनीतिक पराधीनता, आर्थिक दुरवस्था, स्वार्थपरता, नष्टप्रायः वर्णव्यवस्था इत्यादि को देखकर निरालाजी व्यथित हुए । तब उनकी आत्मा की वेदना मुखरित हो उठी । उन्होनें वर्तमान दुरवस्था को मिटा देने का संकल्प किया । सर्वप्रथम निरालाजी ने पराधीनता को ही इस दुरवस्था का मूल कारण माना । वही उनकी वेदना का कारण बनती हैं, वे कहते हैं –

"उठा आज कोलाहल गया लुट सकल संबल ।
शक्तिहीन तन निश्चल रहित से रक्त रग – रग ।।
मिला ज्ञान से जो धन, नहीं हुआ निश्चेतन,
बांधो उससे जीवन, साधो पग पग यह डग" ।। [4]

अन्तिम पंक्तियों में आकर भारतीयों का वर्तमान कर्तव्य भी निरालाजी ने स्पष्ट कर दिया हैं । पराधीनता के भयंकर पाशों को तोड देने और उस मार्ग में आनेवाले अवरोधों को कुचल देने की कामना एवं प्रार्थना निरालाजी भारत माता से प्रार्थना करते हैं ।

"दे मैं करूं वरण जननी,
दुःख-हरण पद राग-रंजित मरण ।
भीरुता के बंधे पाश सब छिन्न हों ,
मार्ग के रोध विश्वास भिन्न हो" । [5]

निरालाजी को भली-भांति विदित हैं कि हमारी पारस्परिक फूट, व्यक्तिगत भेद-भाव और आन्तरिक दुर्बलताओं के कारण ही हमारी सारी शक्ति छिन्न हो गयी हैं ।

“टूट पडो वह जाओ, दूर तक फैलाओं,
अपनी श्री अपना रंग ,
अपना रूप अपना राग ।
व्यक्तिगत भेद ने छिन ली हमारी शक्ति” [6]

निरालाजी को इस बात का अपार विश्वास हैं कि स्वतंत्रता की भावना से उद्दीप्त होकर दुःख –दारुण परतंत्रता पर यदि भारतवासी टूट पडे तो उनकी शक्ति के समक्ष सुमेरू भी ठहर नहीं सकता । वास्तव में हमारी शक्ति दुर्जय और अपार हैं ।

"उठती हैं नग्न तलवार जब स्वतंत्रता की,
कितने ही भावों से,
यदि दिलाकर दुःख-दारुण परतंत्रता का,
फूकती स्वतंत्रता निज मंत्र से जब व्याकुल कान,

कौन वह सुमेरु रेणु जोन हो जाय!
इसीलिए दुर्जय हैं हमारी शक्ति" [7]

कवि निरालाजी भारतीय सांस्कृतिक वैभव के अनन्य भक्त हैं और पराधीन भारत के निराशाजनक परिस्थिति पुरातन काल की सांस्कृतिक विजय का स्मरण कराती हैं। निरालाजी एक ओर उपनिषद् काल की आश्रम सभ्यता और पावन वन-भूमि स्मरण आती हैं तो वे प्रफुल्लित हो कर गा उठते हैं।

"हरित पत्रों से ढके, श्यामल छाय के वे
शान्ति के निबिड नीड मलयौज सुवास-स्वच्छ
पुष्प रेणु पूरित आश्रमतपोवन.....
प्रागंण विभूति का, बालिका की क्रीडाभूमि
कल्पना की धन्य गोद,
सभ्यता का प्रथम विकास-स्थल" ।। [8]

तो दूसरी ओर सहस्राब्दि में वे भारतीय इतिहास के अध्यायों का अवलोकन करते हैं और ऐतिहासिक चेतना के द्वार राष्ट्रीय भावना को जागृत करने की चेष्टा करते हैं।

"आ रही याद, वह उज्जयिनी वह निरवसाद,
प्रतिमा वह तइतिवृत्तात्म कथा,
वह आर्यधर्म, वह शिरोधार्य वैदिक समता,
पाटलीपुत्र की बौद्धश्री का अस्तरूप
वह हुई और भू-हुए जनों के और भूय,
वह नवरत्नों की प्रभा , सभा के सुदृढ स्तम्भ
लेखन में कालिदास के अमल कला-कलन"....।। [9]

राष्ट्रीय उद्बोधन के कार्य में निरालाजी की कविता "जागो फिर एक बार" का एक विशेष स्थान हैं। इसमें गीता के कर्मयोग और वेदान्त का पौरुषपूर्ण आख्यान हैं इसमें प्राकृत उपादानों के माध्यम से और ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिपार्श्व में संकेतात्मक पद्धति पर "गया दिन आयी रात गयी रात खुला दिन" कहकर कवि जागरण का भावोत्तेजक और वीर रसात्मक उदात्त काव्य प्रस्तुत करते हैं। इस गीत में भारत की स्वतंत्रता का उद्घोष हैं। राष्ट्रीय क्रांती ज्वार से अभिभूत उस काल में (1918-1921) इस उद्बोधन का जन-जन पर कितना प्रभाव पडा होगा इसका अनुमान किया जा सकता हैं। राष्ट्र उद्बोधन के लिये वीर गोविन्दसिंह वीरत्व को उत्तेजित करते हुए कह रहे हैं।

"सवा सवा लाख पर एक को चढाउंगा
किसने सुनाया यह वीर जन मोहन अति
दुर्जय संग्राम राग,

फाग का खेला रण बांरहों महीनों मैं!
शेरों की मांद में आया हैं आज स्यार,
जागो फिर एक बार" ।। [10]

शूरवीरों के भारत में छली-प्रवंचक विदेशियों के प्रवेश को "शेरों के मांद मे आया हैं आज स्यार" कहकर बहुत ही प्रभावपूर्ण बना दिया हैं। इस गीत में कवि एक ओर भारतीयों की प्राचीन वीरता की याद दिलाकर उन्हें जागृत कराना चाहते हैं , ओर दूसरी ओर मेष माता की तरह अपनी निरीहता और निश्चेष्टता पर हाथ मलने वालो की भर्त्सना भी करते हैं। वे उनमें राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जागरण लाना चाहते हैं।

निरालाजी की राष्ट्रीयता सभी बंधनों से मुक्ती चाहती हैं। ऊंच –नीच, सबल-निर्बल, विजित-विजेता इत्यादि भेद-भावों को नष्ट कर सर्वत्र एक ही शुद्ध और अनंत आत्मा का दर्शन करती हैं। उनके स्वाधीन राष्ट्र में दंभ कपट के लिये स्थान ही नही हैं। सभी के लिए करुणा व्याप्त रहती हैं। प्रभु से निरालाजी दलित-पीडितों पर करुणा करने की कृपा करते हैं।

"दलित जन पर करो करुणा
दीनता पर उतर आये,
प्रभु! तुम्हारी शक्ति अरुणा,
हरे तन-मन प्रीति पावन, मधुर हो मुख मनोभावन,
सहज चितवन पर तंरगित, हो तुम्हारी किरण करुणा" ।। [11]

मानव आत्मा की मुक्ति की कामना करने वाली निरालाजी की राष्ट्रीयता भारतीय समाज में दिखाई पडने वाली वर्णगत विषमता, ऊंच –नीच का भेदभाव, सांमती व्यवस्था, निर्धनता, विधवा समस्या, इत्यादि सभी कुरीतियों को ध्वंस करके एक शुद्ध मानवतावदी वातावरण लाना चाहते हैं। वर्णाश्रम धर्म की केंचुली मात्र की रक्षा किये रहने वाले समाज में शूद्रों की दयनीय स्थिति देखकर निरालाजी करुणा-द्रवित होकर कहते हैं।

"मैनें देखा बडा मैला, मन उसका समाज से
चोट खायी हुयी वह रामजी के राज से
शूद्रों को मिला नहीं, जिनसे कुछ भी नहीं"" ।। [12]

निरालाजी की राष्ट्रीयता संकुचित नही हैं। शुद्ध मानवतावादी पृष्ठभूमि पर उनकी राष्ट्रीयता निखर उठती हैं।जहां मानव-मानव में साम्य हो, नर-नारी समान हो और राष्ट्र – राष्ट्र में एकता हो। मानव मात्र के प्रति स्नेही निरालाजी वर्तमान जीवन के वैषम्यों और विकृतियों को देख वितृष्णा एवं खीझ के अपने उद्गार व्यक्त करते हैं।

"मानव जहां बैल छोडा हैं,
कैसा तन-मन का जोडा हैं"
किन साधन का स्वांग रचा यह,

किस बाधा की बनी त्वचा यह,
देख रहा हैं विज्ञ आधुनिक,
वन्य भाव का कोडा हैं'" ॥ [13]

स्त्री स्वातंत्र्य स्त्री-शिक्षा आदि के संबन्ध में भी निरालाजी ने अपने विचार प्रकट किए हैं। राष्ट्रीयता के जागरण में स्त्री-शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान हैं। राष्ट्रसेवी निरालाजी नारी की दीनता, निराशता और असहायता का चित्रण करते हुए भी उसे प्रेरणा और शक्ति के स्रोत के रूप में देखते हैं। "तुलसीदास" की रत्नावली नारीत्व की भव्य मूर्ति हैं, और वासनात्मक व्यक्ति को जला देने वाली हैं। सरस्वती और लक्ष्मी के रूप में रत्नावली का चित्रण करके नारी के सौम्य स्वरूप का ही चित्र निरालाजी प्रस्तुत करते हैं।

"संकुचित खोलती श्वेत पटल,
बदली कमला तिरती सुख जल,
प्राची दिगन्त उर में पुष्कल रवि-रेखा" [14]

निरालाजी ने नारी को "सारे ब्रह्माण्ड के मूल रूप में विराजनेवाली आदि शक्तिरूपणी" ही माना और इसी विचार से अनुप्राणित होकर "पंचवटी प्रसंग"में भारत माता के रूप में सीताजी को प्रस्तुत करके देशप्रेमी लक्ष्मण को उनके हित आत्मोत्सर्ग करने के लिए प्रस्तुत दिखाया –

"माता की तृप्ति पर बलि हो,
शरीर-मन मेरा सर्वस्व सार
तुच्छ वासनाओं का, विसर्जन मैं कर सकूं,
कामना रहे तो एक, भक्ति ही बनी रहे" [15]

मातृ-भूमि के प्रति निरालाजी की भक्ति जैसी अगाध रही वैसी ही अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति भी उनकी अपार निष्ठा रही। नव-जागरण के उपादानों में देशप्रेम का सर्वप्रथम स्थान हैं।

उसमें भषा-प्रेम का भी महत्वपूर्ण रहता हैं। भारतीय सांस्कृतिक उत्थान के अग्रणी कवि निरालाजी संस्कृत, बांग्ला अंग्रेजी इत्यादि भाषाओं के बडें ज्ञाता तो थे ही, परन्तु हिन्दी के प्रति उनकी आस्था गहरी थी। वे चाहते थे कि हिन्दी का सम्मान बढें। हिन्दी साहित्यकारों को समाज में उचित स्थान प्राप्त हो। विदेशी भाषा, संस्कृति, साहित्य इत्यादि के प्रति सामान्य जनता विशेषकर राजनीतिक नेताओं का मोह देखकर वे तिलामिला जाते थे।

निरालाजी की यह राष्ट्रीयता, राष्ट्र की संकुचित सीमा से ऊपर उठकर एक नूतन विश्व संस्कृति का उदात्त स्वरूप ग्रहण करती हैं। "जहां विश्व-जीवन की विविधता एकता में खो जाती हैं। काले-काले पीले-पीले श्वेत जन में शान्ति की रेखा खिंची रहती हैं और (विश्व-मानव

की) दृष्टी में (पारस्परिक) परायी अपरिचयता सो गयी हैं" । उद्बोधन कविता में निरालाजी उस विश्व राष्ट्रीयता का स्वरूप इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं ।

"नहीं आज का यह हिन्दु, आज का मुसलमान,
आज का ईसाई ,सिक्ख आज , आज का मनोभाव,
आजम की यह रूप-रेखा , नहीं यह कल्पना,
सत्य हैं मनुष्य का मनुष्यत्व के लिए,
बन्द हैं जो दल अभी किरण सम्पात से,
खुल गये वो सभी" [16]

निरालाजी के काव्य में विद्यमान राष्ट्रीय चेतना के संबन्ध में श्रीधनंजय वर्मा बडी स्पष्टता के साथ कहते हैं – "विशुद्ध राष्ट्रीय चेतना का विस्तार सीमा और समय की अवमानना करता हुआ विस्तृत पटभूमि में संस्कृति की गहन गहराइयों जड जमाता हैं । निराला इसी अर्थ में राष्ट्रकवि हैं.....भारतीय स्वतन्त्रता के प्रति जितना आवेग उनके काव्य में मिलता हैं उतना समय के स्वर में और कहीं नही मिलता" । [17]

संदर्भ सूची

1. डॉ नागेन्द्र आधुनिक हिंदी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ पृ सं 28-29
2. निराला –गीतिका (कावय संग्रह) पृ सं 73 सं-सूर्यकांत त्रिपाठी प्रकाशक-राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
3. डॉ नागेन्द्र आधुनिक हिंदी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ पृ सं-23
4. निराला गीतिका (कावय संग्रह) पृ सं 81 सं-सूर्यकांत त्रिपाठी प्रकाशक-राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
5. निराला गीतिका पृ.स. 97 (कावय संग्रह) सं-सूर्यकांत त्रिपाठी प्रकाशक-राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
6. निराला परिमल महाराणा शिवाजी का पत्र पृ.स.210 सं-सूर्यकांत त्रिपाठी प्रकाशक-राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
7. निराला परिमल महाराणा शिवाजी का पत्र पृ.स.245-246 सं-सूर्यकांत त्रिपाठी प्रकाशक-राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
8. निराला अणिमा सहस्त्राब्दि पृ 245-246 सं-सूर्यकांत त्रिपाठी प्रकाशक-लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद प्रकाशन 2015
9. निराला अणिमा सहस्त्राब्दि पृ सं 35 सं-सूर्यकांत त्रिपाठी प्रकाशक-लोकभारती प्रकाशन

PURVA MIMAANSA

इलाहाबाद प्रकाशन 2015

10. निराला परिमल जागो फिर एक बार पृ सं 176-177 सं-सूर्यकांत त्रिपाठी प्रकाशक-राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली

11. निराला अणिमा पृ सं 14 -सूर्यकांत त्रिपाठी प्रकाशक-लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद प्रकाशन 2015

12. निराला नये पत्ते पृ सं 48 सूर्यकांत त्रिपाठी प्रकाशक-लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद प्रकाशन 2015

13. निराला आराधनागीत पृ सं 73

14. निराला तुलसीदास पद्य सं 100 सूर्यकांत त्रिपाठी प्रकाशक-राजकमल प्रकाशन प्रकाशन 2009 नई दिल्ली

15. निराला परिमल पंचवटी प्रसंग पृ सं 224-225 सं-सूर्यकांत त्रिपाठी प्रकाशक-राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली

16. निराला अणिमा पृ सं 48-49 सूर्यकांत त्रिपाठी प्रकाशक-लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद प्रकाशन 2015

17. धनंजय वर्मा – निरालाकाव्य और व्यक्तित्व पृ सं 124

ग्रन्थसूची

निरालाकृत-गीतिका (काव्यसंग्रह), सम्पादक- सूर्यकान्तत्रिपाठी, प्रकाशक-राजकमल प्रकाशन, वर्ष-2018, स्थान- नई दिल्ली

निरालाकृत-परिमल (काव्यसंग्रह), सम्पादक- सूर्यकान्तत्रिपाठी, प्रकाशक-राजकमल प्रकाशन, वर्ष – 2008, स्थान- नई दिल्ली

निरालाकृत-अनामिका (काव्यसंग्रह), सम्पादक- सूर्यकान्तत्रिपाठी, प्रकाशक-राजकमल प्रकाशन, वर्ष-2004, स्थान- नई दिल्ली

निरालाकृत-अणिमा (काव्यसंग्रह), सम्पादक- सूर्यकान्तत्रिपाठी, प्रकाशक-लोकभारती प्रकाशन, वर्ष-2015, स्थान- इलाहाबाद

निरालाकृत-नये पत्ते (काव्यसंग्रह), सम्पादक- सूर्यकान्तत्रिपाठी (निराला), प्रकाशक- लोकभारती प्रकाशन, वर्ष-2013, स्थान- इलाहाबाद

PURVA MIMAANSA